Dag-2
History P-III

(1)

फिरोजशाह तुगलक की धार्मिक नीति

फिरोजशाह तुगलक को सुल्तान बनाने का श्रेय प्रमुख दरबारियों और उलेमाओं को जाता है। वह धार्मिक प्रवृत्ति का तो था ही साथ ही साथ उसे धर्म सम्बन्धी शिक्षा मिली थी। फिरोज तुगलक की माँ प्रारम्भ में हिन्दू थी, लेकिन फिरोज अपनी धार्मिक नीतियों से यह सिद्ध करना चाहता था कि वह किसी भी सूरत में उन मुसलमानों से निम्न श्रेणी का नहीं है जो पूर्ण रूप से मुस्लिम माँ बाप की संतान है इसलिए उसने कुरान में दिखाए गए मार्ग को अपने जीवन में ढाल लिया और गैर इस्लामिक प्रथाओं का बहिष्कार किया। उसने शरियत के अनुसार प्रशासन चलाया और जनसाधारण का जीवन भी इसी के अनुसार नियंत्रित करने का प्रयास किया। उसने उलेमा की शक्ति और स्थिति को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। अलाउद्दीन खिलजी और मोहम्मद बिन तुगलक की नीतियों के विरुद्ध उसने राजनीतिक और धार्मिक मामलों में उलेमाओं और मौलवियों की सलाह लेना शुरू कर दिया और उन्हें प्राथमिकता दी। फिरोज तुगलक की इस नीति के कारण सुल्तान —

P.T.O.

और मौलवियों के बीच का वह विवाद समाप्त हो गया जो एक लम्बे समय से चला आ रहा था; लेकिन इससे शासन व्यवस्था को काफी नुकसान हुआ, क्योंकि उलेमाओं का दृष्टिकोण काफी न्यून था जो प्रशासन के लिए हानिकारक था। फिरोज ने एक सच्चे मुस्लिम शासक की भाँति व्यवहार किया। हिन्दू धर्म और मूर्ति पूजा को समाप्त करने का प्रयास किया। उसने उन हिन्दुओं पर जजिया कर नहीं लगाया जो मुसलमान बन गए। उसने धर्म परिवर्तन को जागीर, पुरस्कार, उपाधियाँ, सम्मान और सरकारी नौकरियों आदि के प्रलोभन से प्रोत्साहित किया। वह जितने मन्दिरों को नष्ट कर सकता था उसने किया। उसने अनेक ब्राह्मणों को इस बात का दोषी बताकर मृत्युदण्ड दिया कि उन्होंने मुसलमानों को हिन्दू बनाने का प्रयास किया है। फिरोजशाह तुगलक शिया मुसलमानों का भी कट्टर विरोधी था। उसने अनेक शिया मुसलमानों को भी दण्डित किया और उनकी धार्मिक पुस्तक जला दी। वह मिस्र के खलीफा को सम्मान देता था और उसने दो बार खलीफा से सम्मान प्राप्त किया। उसने स्वयं खलीफा का नायब घोषित किया।